फेडरल रिजर्व की दर कटौती का महत्व और भारत पर इसका प्रभाव

लेखक -अनिल ससी (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-III (भारतीय अर्थव्यवस्था) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

2 अगस्त, 2019

"2008 के वित्तीय संकट के बाद पहली बार अमेरिका के फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में कटौती की है। यहाँ आश्चर्यचकित करने वाली बात यह है कि यह कदम एक मजबूत अमेरिकी अर्थव्यवस्था और जॉब मार्केट में नए सिरे से दिख रहे उछाल के बावजूद लिया गया है।"

बुधवार की देर शाम (भारतीय समय के अनुसार), संयुक्त राज्य अमेरिका के फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में तिमाही-प्रतिशत-दर कटौती की घोषणा की, जो 11 वर्षों में पहली दर कटौती है।

अब सवाल उठता है कि आखिर यह दर-कटौती क्यों की गयी, ऐसा क्या कारण था जिसकी वजह से 2008 में आये वैश्विक वित्तीय संकट के बाद पहली बार यह कदम उठाना पड़ा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यूएस फेड ने छह महीने पहले ही इस पहल का संकेत दे दिया था, जिसका उद्देश्य ऋण-ग्रस्त अमेरिकी अर्थव्यवस्था को समर्थन प्रदान करना था।

फेड द्वारा रेट में कटौती क्यों की गयी?

फेड ने दर में कटौती का कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था और मौन अमेरिकी मुद्रास्फीति बताया है और यह संकेत दिया है कि जरूरत पड़ने पर उधार की लागत को भी कम किया जा सकता है। इसके अलावा, अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने कहा है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था वर्ष के पहले छह महीनों में 'स्वस्थ गति से' बढ़ी है।

फेडरल की बैठक से पहले वित्तीय बाजारों में पहले से ही उम्मीद की जा रही थी कि तिमाही-प्रतिशत-दर में बड़ी कटौती की जाएगी, जैसे कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने रातों-रात कर्ज दर को 2.00 फीसदी से 2.25 फीसदी तक कम कर दिया था।
अपनी दो दिवसीय नीतिगत बैठक के संपन्न होने पर फेडरल ने एक बयान में कहा कि आर्थिक दृष्टिकोण के साथ-साथ मौन मुद्रास्फीति के दबावों के लिए वैश्विक विकास को देखते हुए दरों में कटौती करने का फैसला किया गया है।

केंद्रीय बैंक ने कहा कि यह रिकॉर्ड लंबे समय तक अमेरिकी आर्थिक विस्तार को बनाए रखने के लिए उपयुक्त होगा।

फेड फंड्स रेट में कम से कम 75 बेसिस पॉइंट्स तक की कटौती की उम्मीद थी, जो कि अगस्त के अंत से रेट-कट चक्र के साथ शुरू हो जाएगी (एक बीपीएस, एक प्रतिशत अंक के सौवें हिस्से के बराबर होता है)। हालांकि,फेड के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल ने रेखांकित किया कि दर में कटौती केवल 'नीति के लिए मध्य-चक्र समायोजन' थी। इस प्रकार दरों में कई अनुक्रमित कटौती को खारिज कर दिया गया है।

क्या कटौती नीति में बदलाव का संकेत है?

नीतिगत दरों में कटौती महीनों से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के दबाव का परिणाम है, जो विकास को बढ़ाने के लिए दरों में कटौती के लिए अमेरिकी केंद्रीय बैंक पर दबाव डाल रहे थे। पॉवेल ने बार-बार आर्थिक आंकड़ों का पालन करने का वादा किया है और राष्ट्रपति की ओर से दिए जा रहे दबाव का विरोध किया है।

फेड ने अपने बयान में कहा, "जून में फेडरल ओपन मार्केट कमेटी से मिली जानकारी बताती है कि श्रम बाजार मजबूत बना हुआ है और आर्थिक गतिविधियां मध्यम स्तर पर बढ़ रही हैं। 'हाल के महीनों में औसत रूप से रोजगार के लाभ ठोस रहे हैं और बेरोजगारी दर कम पर बनी हुई है।"

गौरतलब हो कि फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी, FOMC) फेड के भीतर एक पैनल है, जो नीतिगत दरों को स्थापित करने के लिए जिम्मेदार है। हालांकि, एफओएमसी के 10 सदस्यों में से दो ने दरों में कटौती के फैसले का विरोध किया है।

इसके अलावा, यह फैसला ट्रम्प को प्रभावित करने में विफल रहा क्योंकि ट्रम्प को एक दर में बड़ी कटौती चाहिए थी। राष्ट्रपति ने ट्विटर पर पोस्ट करते हुए पॉवेल का मजाक उड़ाया: 'जे पॉवेल और फेडरल रिजर्व से बाजार जो चाहता है उन्होंने वैसा नहीं किया, यह एक लंबी और आक्रामक दर-कटौती चक्र की शुरुआत है जो चीन, यूरोपीय संघ और दुनिया भर के अन्य देशों के साथ तालमेल बनाए रखेगा। हमेशा की तरह, पॉवेल ने हमें निराश कर दिया है, हम वैसे भी जीत रहे हैं, लेकिन मुझे निश्चित रूप से फेडरल रिजर्व की ज्यादा मदद् नहीं मिल रही है!'

भारत सहित उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

सैद्धांतिक रूप से, अमेरिका में दर में कटौती उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई, EMEs) के लिए सकारात्मक होनी चाहिए, विशेष रूप से ऋण बाजार के नजरिए से। भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं में उच्च मुद्रास्फीति होती है और इसके कारण अमेरिका और यूरोप जैसे विकसित देशों की तुलना में अधिक ब्याज दर होती है। नतीजतन, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई, FIIs) डॉलर के संदर्भ में कम ब्याज दरों पर अमेरिका में पैसा उधार लेना चाहते हैं और फिर उस पैसे को विकासशील देशों: जैसे-भारत में बॉन्ड में निवेश करते हैं ताकि ब्याज दर अधिक हो।

जब यूएस फेड अपनी ब्याज दरों में कटौती करता है, तो दोनों देशों की ब्याज दरों के बीच अंतर बढ़ जाता है, इस प्रकार भारत मुद्रा व्यापार के लिए और अधिक आकर्षक बन जाता है।

फेड द्वारा दर में कटौती का मतलब अमेरिका में विकास को अधिक प्रोत्साहन मिलने से संबंधित है, जो वैश्विक विकास के लिए सकारात्मक खबर हो सकती है। लेकिन यह अमेरिका में अधिक इक्विटी निवेश में भी तब्दील हो सकता है, जो बाजार की अर्थव्यवस्थाओं के लिए आनुपातिक तरीके से निवेशकों के उत्साह को कम कर सकता है।

शेयर बाजारों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा और क्यों पड़ेगा?

अमेरिकी फेडरल रिजर्व की दर में कटौती के फैसले के बाद भारतीय शेयरों में गिरावट दर्ज की गई। जबकि घरेलू कारकों जैसे कि निराशाजनक जुलाई कार बिक्री डेटा और धीमी जीडीपी विकास अनुमानों ने थोड़ी चिंताएं बढ़ाई हैं। बीएसई सेंसेक्स 37,000 अंक से नीचे रहा, निफ्टी-50 भी इंट्रा-डे व्यापार में 11,000 अंक पार कर गया।

अगले सप्ताह आरबीआई द्वारा अपेक्षित 50 बीपीएस कटौती से बॉन्ड बाजार में फिर से एक नया दौर शुरू होगा (जैसा कि निवेशक सरकारी बॉन्ड खरीदते हैं, कीमतों में वृद्धि होती है, और प्रतिफल कम हो जाता है। कम प्रतिफल कम जोखिम का संकेत देता है, लेकिन अगर बॉन्ड द्वारा पेश किए गए प्रतिफल जारी समय से अधिक हों, तो ऐसी संभावना है कि सरकार जो साधन जारी करती है वह आर्थिक रूप से तनाव में हों और पूंजी चुकाने में असमर्थ हों)।

विश्लेषकों के अनुसार, यह भी चिंता है कि अगर डॉलर के मुकाबले एशियाई उभरते बाजार की मुद्राएं तेजी से कमजोर होती रहें, तो आरबीआई नीतिगत दर में कटौती करने के बारे में फिर से विचार कर सकता है।

हांगकांग के हैंग सेंग में 0.7% और शंघाई कम्पोजिट में 0.8% की गिरावट के साथ एशियाई बाजारों में ज्यादातर गुरुवार को कारोबार हुआ। जापान के निक्केई ने हालांकि इस प्रवृत्ति को कम किया है। ब्रिटेन का FTSE 100 0.2% गिर गया और जर्मनी का DAX 0.1% गिर गया। लेकिन फ्रांस का सीएसी-40 0.4% चढ़ गया है।

GS World Committed to Excellence

अमेरिकी फेडरल रिजर्व

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में फेडरल रिजर्व ने साल 2008 के बाद से पहली बार ब्याज दरों में कटौती की है। फेड ने एक दशक से ज्यादा समय बाद दरों में कटौती की है।
- फेडरल रिजर्व द्वारा यह कदम अर्थव्यवस्था में गिरावट की आशंका से बचने के लिए उठाया गया है।
- यह कटौती पिछले एक दशक में सबसे अधिक है। फेडरल ने कर्ज लेने की लागत को जरुरत पड़ने पर और कम करने के संकेत दिए हैं।
- फेडरल की बैठक से पहले वित्तीय बाजारों में पहले से ही उम्मीद की जा रही थी कि तिमाही-प्रतिशत-दर में बड़ी कटौती की जाएगी, जैसे कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने रातों-रात कर्ज दर को 2.00 फीसदी से 2.25 फीसदी तक कम कर दिया था।
- अपनी दो दिवसीय नीतिगत बैठक के संपन्न होने पर फेडरल ने एक बयान में कहा कि आर्थिक दृष्टिकोण के साथ-साथ मौन मुद्रास्फीति के दबावों के लिए वैश्विक विकास को देखते हुए दरों में कटौती करने का फैसला किया गया है।
- फेडरल ने यह भी कहा कि इसकी मॉनिटरिंग जारी रहेगी। देखा जाएगा कि यह अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित कर रहा है और अमेरिकी अर्थव्यवस्था का विस्तार बनाए रखने को यह कितना उपयुक्त होगा।
- फेडरल रिजर्व की इस घोषणा के बाद अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल और सोने की कीमत में गिरावट देखी गई है।
- इस फैसले के बाद कच्चे तेल की कीमतें 1.06 डॉलर प्रति बैरल घटकर 63.99 डॉलर पर पहुंच गई है। वहीं, अक्टूबर महीने के लिए गोल्ड फ्यूचर का निपटान अमेरिका में 0.4 फीसदी घट गया है।
- यह फेडरल के फैसले के बाद 1,431.80 डॉलर प्रति औंस हो गया है।

फेडरल ओपन मार्केट कमेटी

- एफओएमसी यानी फेडरल ओपन मार्केट कमेटी है। यह फेडरल रिजर्व सिस्टम के अधीन एक समिति है।
- इसे अमेरिकी कानून के तहत देश के ओपन मार्केट के संचालन की देखरेख के साथ ब्याज दरों और अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति की व्यवस्था के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए गठित किया गया है।

Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **हाल ही में अमेरिकी फेडरल रिजर्व बैंक द्वारा ब्याज दरों में कटौती की गई है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

   1. इससे विश्व के पूंजी बाजार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
   2. इससे वैश्विक उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Recently American Federal Reserve Bank has cut the interest rate, in this context, consider the following statements-**

   1. It has negetive effect on the capital market of the world.
   2. It has negetive effect on the global capital market ecomomies.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1 (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: हाल ही में अमेरिकी फेडरल रिजर्व बैंक द्वारा ब्याज दरों में कटौती के पश्चात् भारत सहित विश्व की अन्य उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा कीजिए। **(250 शब्द)**

Q. Discuss the effect on the other emerging market economies along with India after the interest rate cut by American Federal Reserve Bank recently. **(250 Words)**

नोट : 1 अगस्त को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(b) होगा।

Committed To E